तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की भूमिका: आरम्भिक मध्यकालीन भारत के विशेष संदर्भ में

उर्जेश कुमार
बौद्ध अध्ययन विभाग,दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email Id: singh.urjesh12991@gmail.com

तिब्बत में स्थापित बौद्धधर्म, महायान शाखा की उपशाखा है। यह धर्म तिब्बत के अलावा मंगोलिया, भूटान, नेपाल के उतरी-क्षेत्र, उत्तर भारत के लद्दाख, अरुणाचल-प्रदेश, सिक्किम, रूस के कलमिकीया एवं तुवा क्षेत्रों में तथा चीन के पूर्वी भागों में प्रचलित है। तिब्बती बौद्ध धर्म को लामावाद के नाम से भी जाना जाता है, जो बौद्ध धर्म का विशिष्ट या विभेदित रूप है। यह धर्म तिब्बत में सातवी शताब्दी के समय विकसित हुआ। यह मुख्य रूप से माध्यमिक तथा योगाचार दर्शन के कठोर बौद्धिक नियमों पर आधारित है और इसमें वज्रयान के भी कुछ नियमों का पालन होता है। तिब्बती इस सम्प्रदाय की धार्मिक भाषा है और इसके अधिकतर धर्मग्रन्थ तिब्बती व संस्कृत में ही लिखे हुए हैं।

जिस प्रकार भारतीय इतिहास लिखित रूप से महान बौद्ध सम्राट अशोक के समय में लिखा जाने लगा, उसी प्रकार तिब्बत का इतिहास भी वहाँ के सबसे गुणवान राजा स्रोङ्ग-सन-गन-पो (जन्म 617 ईस्वी) से मिलता है। सातवीं शताब्दी मे सम्राट स्रोङ्ग-सन-गन-पो के राजगद्दी पर बैठते ही उन्हें तिब्बत में शिक्षा के प्रचार-प्रसार की गहन आवश्यकता हुई। तिब्बती सम्राट स्रोङ्ग-सन-गन-पो बौद्ध अनुयायी होने के बाद एक कानून बनाया कि सभी तिब्बतवासी बोन को छोड़ कर बौद्ध धर्म को अपनाएं। इस कार्य को और आगे बढ़ाने के लिए राजा ने अपने दरबार के एक सबसे विद्वान तिब्बती युवा को चुना। इस युवा का नाम थोन-मी

सम-भो-ट था[1]। थोन-मी सम-भो-ट के साथ सोलह और शिष्ट मंडलों को भारत भेजा गया जो उस समय के प्रमुख विश्वविद्यालयों में बौद्ध अध्ययन, भारतीय शिलालेख पठन, ध्वनि शास्त्र तथा व्याकरण का अध्ययन करने के लिए आए और वापस जाकर तिब्बत मे भारतीय बौद्ध धर्म एवं भाषा का पुनरूथान किया। इस तरह स्रोङ्ग-सन-गन-पो के समय में बौद्ध ग्रंथों के अनुवाद द्वारा तिब्बत में बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार और बौद्ध-मंदिरों के निर्माण से बुद्ध प्रतिमा की पूजा द्वारा महायान धर्म के भी प्रचार का शुभारंभ हुआ। इस कार्य के बाद भी तिब्बत के राजाओं ने समय-समय पर बौद्ध धर्म के विकास हेतु भारतीय बौद्ध आचार्यों से सहयोग लिया, जिसमें शांतरक्षित, पद्म्शंभव और कमलशील प्रमुख हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य में उस समय के विश्वविद्यालयों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है जिसमें से विक्रमशिला विश्वविद्यालय का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।

विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना पाल वंशिय राजा धर्मपाल के शासनकाल में हुई, यह विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय का परवर्ती समकालीन था। यह विश्वविद्यालय अपने चरम उन्नति के काल में तिब्बतियों में बहुत प्रसिद्ध था और तिब्बत से विद्वानों व यात्रियों को आकर्षित करता रहता था, जिसका प्रमुख कारण विक्रमशिला विश्वविद्यालय व तिब्बती बौद्ध केन्द्रों के मध्य पारस्परिक संपर्क था[2]। विक्रमशिला विश्वविद्यालय अपने स्थापना के कुछ ही वर्षों में उस समय के विश्व प्रसिद्ध नालंदा विश्वविद्यालय जैसी प्रसिद्धि प्राप्त करने में सफल रहा। यहाँ के विद्वानों की कृति सुनकर उस समय तिब्बत के तत्कालीन राजा व्यङ्-छुप्-ओद्[3] ने बौद्ध धर्म को अपने यहाँ मजबूत करने के लिए इस शिक्षा केंद्र में एक तिब्बती शिष्ट मण्डल भेजा। इस शिष्टमंडल के आने का प्रमुख उद्देश्य यह था कि श्रीज्ञान दीपंकर अतिश जैसे महान

[1] पी॰वी॰ बापट, *बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष*, (दिल्ली: प्रकाशन विभाग भारत सरकार, 1997), 51.

[2] प्रिय सेन सिंह, *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल*, (दिल्ली: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशलय, 1991), 98.

[3] भारतीय नाम बोधि प्रभ

विद्वान को तिब्बत बुलाना, श्रीज्ञान दीपंकर अतिश के साथ उस समय कुल 35 विद्वान विक्रमशिला विश्वविद्यालय से तिब्बत गये[4] जिनका तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

जब श्रीज्ञान दीपंकर अतीश तिब्बत पहुंचे, उस समय वहाँ के लोगों में बौद्ध धर्म की शिक्षाओं का आधार समाप्त हो चुका था। क्योंकि उनके पास बुद्ध की शिक्षाओं का पर्याप्त शैक्षणिक व धार्मिक आधार नहीं था। यह देख कर वह चिंतित हुए और तिब्बत मे धर्मविरुद्ध, गलत धारणाएं एवं धर्म के विपरीत भ्रांतियों को दूर करने के लिए आचार्य दीपंकर ने बोधिपथप्रदीप नामक एक प्रसिद्ध ग्रंथ की रचना की। यह पहला बौद्ध ग्रंथ था जिसने तिब्बत के जनमानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा जिसके फलस्वरूप तिब्बतवासी बौद्ध परंपरा के अनुयायी हो पाए। आचार्य अतिश से पूर्व जितने भी पंडित तिब्बत आए उनका कार्य ग्रंथ लिखने अथवा अनूदित करने तक सीमित रहा। लेकिन अतिश ने जनता में धर्म के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए सार्वजनिक भाषण दिए और एकांत में रहकर शिष्यों को धर्मसुधार व आचरण की शुद्धि के लिए आवश्यक निर्देश दिए। इससे पहले किसी अन्य लोगों का ध्यान इस ओर नहीं गया था। सौभाग्य से आचार्य अतिश के योगदान से ही ऐसा संभव हो पाया और तिब्बती विद्यार्थियों को बौद्धधर्म के क्षेत्र में भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक सीमाओं के पार तक पहुँचा दिया।

श्रीज्ञान दीपंकर अतीश ने तेरह वर्षों तक अपने साथियों के साथ, तिब्बत में सांगोपांग बौद्धधर्म का कार्य सम्पादन किया। प्रचार के साथ-साथ भारतीय ग्रन्थों का तिब्बती भाषा में अनुवाद किया जिससे वहाँ के लोगों का भारतीय बौद्ध धर्म को अनुवादित ग्रन्थों के माध्यम से परिचय हुआ। ऐसे ग्रन्थों की संख्या लगभग दो सौ के आस-पास बताई जाती है, तिब्बती क-ग्युर

[4] हवलदार त्रिपाठी, *बौद्धधर्म और विहार*, (पटना: बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, 1998), 224.

एवं तन-ग्युर के अवलोकन से आचार्य दीपङ्कर विरचित ग्रन्थों की सूची बहुत बड़ी है, लगभग 103 ग्रन्थों की संख्या उनसे संबन्धित है।

तिब्बत में आचार्य अतीश का समय बौद्ध-संस्कृति का स्वर्णयुग था। लेकिन इसी समय भारत में मुसलमानों की विध्वंसकारी नीति के कारण बौद्धधर्म का पूर्णतया अंत हो रहा था। महाविहारों के भिक्षु (पंडित) लोग भाग-भाग कर तिब्बत, नेपाल, स्याम आदि देशों में शरण पा रहे थे। भारतीय पंडितों के ये अंतिम जत्थे थे जिन्होने विश्वविद्यालयों और विहारों को छोड़कर पड़ोसी देसों में जाकर शरण ली, इसके बाद फिर कोई भिक्षु तिब्बत नहीं गया। वर्तमान समय में भारतीय भिक्षु फिर से तिब्बत जाने लगे हैं, लेकिन ये बात अलग है कि मध्यकाल में भारतीय भिक्षु यहाँ से कुछ बौद्ध-शिक्षाओं को लेकर वहाँ देने जाते थे, लेकिन वर्तमान समय में यहाँ के भिक्षु वहाँ से ज्ञान लाकर भारत में इसका गुणगान करने लगे हैं।

तिब्बत के इतिहास में ग्यारहवीं शताब्दी का काल बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। तिब्बती अभिलेखों के अनुसार दीपंकर श्रीज्ञान (980-1053) के नाम से संबंध होने के कारण विक्रमशिला की कृति थी। ओदंतपुरी में अपना अध्ययन पूरा करने के बाद अतीश 1034-1038 ईसवी में विक्रमशिला विश्वविद्यालय के मुख्य बने।[5] इसके बाद ही वे 60 वर्ष की वृद्ध अवस्था में तिब्बत गए। अतीश तिब्बत में लामावाद के प्रचारक-संस्थापक थे और इस तरह आचार्य अतीश तिब्बत में बौद्धधर्म का प्रचार करते हुए 17 वर्ष रहे। इस दौरान उन्होंने तिब्बत के सौभाग्यशाली विनयजनों को सूत्र तथा तंत्र ग्रन्थों का प्रवचन, उपदेश एवं शिक्षा दिया।

इस तरह उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि तिब्बती बौद्धधर्म में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की भूमिका आचार्य श्रीज्ञान दीपंकर अतीश की ही देन है। यही कारण है कि

[5] बापट, 161

चीनी बौद्ध साहित्य में जिस प्रकार नालंदा विश्वविद्यालय को जाना जाता है उसी तरह तिब्बती बौद्ध साहित्य में विक्रमशिला को जाना जाता है। विक्रमशिला विश्वविद्यालय में तिब्बती शिष्टमंडल ने जिन विद्वानों को अपनी आँखों से देखा, उनके नाम थे- रत्नाकर, विद्याकोकिल, नरोपन्त, वीरवज्र और श्रीज्ञान दीपंकर। विक्रमशिला विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि कुछ ही वर्षों में देश-विदेश में फैल गयी। दसवीं सदी में तो यह नालंदा से भी बड़ा और समस्त भारत का बृहत्तर शिक्षा-केंद्र बन गया था। इस विश्वविद्यालय की एक विशेषता यह थी कि यहाँ तंत्र-शास्त्र के अध्ययन के लिए भी समुचित प्रबंध था। तंत्र-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए शास्त्रीय शिक्षा के अतिरिक्त व्यावहारिक शिक्षा का भी पूर्ण प्रबंध था। यही कारण है कि इस विश्वविद्यालय के भिक्षुओं एवं आचार्यों से तिब्बती जन काफी प्रभावित होते थे और इस तरह तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में विक्रमशिला विश्वविद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

चयनित ग्रंथसूची:

- त्रिपाठी, हवलदार. *बौद्ध धर्म और बिहार.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, 1998.
- सांकृत्यायन, राहुल. *तिब्बत में बौद्ध धर्म.* इलाहाबाद: किताब महल, 2012.
- लेगी, जेम्स (अं॰ अनु॰). *रिकॉर्ड ऑफ बुद्धिस्टिक किंगडम्स बाय चाइनीज मोंक, फा-हियान.* ऑक्सफोर्ड: क्लारेंडन प्रेस, 1886.
- वर्म्मा, जगंमोहन (हि॰ अनु॰). *चीनी यात्री फाहियान का यात्रा विवरण.* इंडिया: नेशनल बुक ट्रस्ट, 1996.
- शर्मा, ठाकुर प्रसाद (हि॰ अनु॰). *चीनी यात्री ह्वेनसांग की भारत यात्रा.* इलाहाबाद: आदर्श हिन्दी पुस्तकालय. अगस्त 1972.
- तारानाथ. *भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास.* रिगजिन लुंडुप लामा (हि॰ अनु॰). पटना: काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान,1971.
- उपाध्याय, भरत सिंह. *बुद्धकालीन भारतीय भूगोल.* प्रयाग: हिन्दी साहित्य सम्मेलन, वि॰ संवत 2018.

- पाण्डेय, राजबली. *प्राचीन भारत.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2006.
- झा, द्विजेंद्र नारायण, कृष्ण मोहन श्रीमाली. *प्राचीन भारत का इतिहास.* दिल्ली विश्वविद्यालय: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 1981.
- बाशम, ए॰ एल॰. *अद्भुत भारत.* आगरा: शिवपाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, वेंकटेशचन्द्र पाण्डेय (हि॰ अनु॰). 1993.
- श्रीवास्तव, के॰सी॰. *प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति.* इलाहाबाद: यूनाइटेड बुक डिपो, 1991.
- उपाध्याय, बलदेव. *बौद्ध-दर्शन-मीमांसा.* वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन, पंचम संस्करन 1999.
- बापट, पी॰वी॰. *बौद्ध धर्म के 2500 वर्ष.* नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, 1956.
- शर्मा, रामशरण. *प्रारम्भिक भारत का इतिहास.* नई दिल्ली: ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, 2009.
- सांकृत्यायन,राहुल. *बौद्ध दर्शन.* दिल्ली: किताब महल, 2013.
- दिनकर,रामधारी सिंह. *संस्कृति के चार आध्याय,* इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन, 2006.
- सिंह, प्रिय सेन. *भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थ स्थल.* दिल्ली विश्वविद्यालय: हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2016.